पति–पत्नी का दिव्य व्यवहार

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पति–पत्नी परिवार रूपी रथ के दो पहिए के समान है। दोनों के साथ रहने से परिवार ठीक से चलता है। चौरासी लाख जीव योनियों में पुरुष और स्त्री जाति का अपना महत्व है। सृष्टि न तो पुरुष से अकेले चल सकती है और न ही स्त्री जाति से। सृष्टि का संचालन नर और मादा दोनों के संयोग से होता है। नर और मादा के बिना वंश उत्पत्ति नहीं हो सकती। भारतीय संस्कृति में वंश परम्परा को सामजिक रूप प्रदान करने के लिए विवाह प्रथा की व्यवस्था की गयी है। हमारे देश में संयुक्त परिवार प्रथा को अधिक महत्व दिया गया है। इस प्रथा में परिवार के सभी सदस्य संस्कार सिखते हैं, किन्तु आजकल परिवार सीमित होता जा रहा है। जीवन को चार पुरुषार्थों में बांटा गया है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। काम जीवन का प्रमुख पुरुषार्थ है। काम को व्यवस्थित करने के लिए विवाह प्रथा की व्यवस्था की गयी है। विवाह व्यवस्था में पति–पत्नी में सामंजस्य होना चाहिए।

जैसे एक पहिए से गाड़ी नहीं चल सकती वैसे पति–पत्नी के बिना गृहस्थ धर्म नहीं चल सकता। गृहणी को ही घर कहा गया है। दोनों के दिव्य व्यवहार से परिवार सुखमय होता है। दोनों में सामंजस्य होना चाहिए। प्रेम से दोनों को जीवनयापन करना चाहिए। यदि परिवार में विवाद हो जाए तो दोनों को बैठकर समस्या का समाधान कर लेना चाहिए। ऐसा व्यवहार नहीं होना चाहिए कि दोनों एक–दूसरे के विरूद्ध हो जाएं। दोनों की सहनशीलता का परिवार पर बहुत असर पड़ता है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध माता–पिता को ही करना पड़ता है। यदि बच्चों में अच्छा संस्कार डाला गया है तो उनका भावी जीवन अच्छे ढंग से व्यतीत होता है। पति–पत्नी में केवल दो दिलों का ही मिलन नहीं है बल्कि यह जन्म–जन्मान्तर का मिलन है। बिना पत्नी के धार्मिक कार्य अपूर्ण माना जाता है। भगवान राम ने सीता की स्वर्ण की प्रतिमा बनाकर के यज्ञ कार्य सम्पादन किया था। इससे यह ज्ञात होता है कि किसी भी धार्मिक कार्य के सम्पादन में पत्नी का विशेष महत्व है।

भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कारों में विवाह भी एक संस्कार है। विवाह का तात्पर्य है वर और वधू का मिलन। सामाजिक व्यवस्था के संचालन में विवाह का महत्वपूर्ण योगदान है। विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है। स्वस्थ समाज की स्थापना में विवाह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान हैं। विवाह के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि विवाह न हो तो समाज पशुवत हो जायेगा। विवाह एक प्रकार का दो आत्माओं का मिलन है। भारतीय जीवन दृष्टि और पाश्चात्य जीवन दृष्टि में बहुत अन्तर है। पाश्चात्य संस्कृति में विवाह एक समझौता है। पति और पत्नी में जब तक प्रेम हैं तब तक एक साथ रहते है। जैसे ही किसी प्रकार का विवाद हुआ, तलाक देकर दूसरा विवाह कर लेते है। किन्तु हिन्दू धर्म के अनुसार यह एक ऐसा पवित्र बन्धन हैं जिसमें दो आत्माओं का मिलन होता है। जीवन और मृत्यु तक दोनों साथ–साथ रहने का वचन देते है। अग्नि को साक्षी मानकर पुरोहित के द्वारा विधिवत् कर्मकाण्ड की विधि से यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है।

विवाह धर्म के आधार पर होते हैं। हिन्दू धर्म में हिन्दू धर्म की रीति रिवाज के अनुसार विवाह सम्पन्न होता है। ईस्लाम धर्म की रीति रिवाज के अनुसार विवाह होता हैं और ईसाई धर्म में ईसाई रीति रिवाज के अनुसार विवाह सम्पन्न होता है। कभी–कभी प्रेम विवाह का भी आयोजन हो जाता है। ऐसा विवाह न्यायालय में जाकर लड़के और लड़की न्यायाधीश के समक्ष अपनी वेवाहिक योजना के बारे में शपथ पत्र देकर पति और पत्नी की तरह रहने का राजीनामा करा लेते है। ईस्लाम धर्म में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन है। किन्तु हिन्दू धर्म में केवल एक ही विवाह किया जा सकता है।

ईस्लाम धर्म में बहु विवाह की प्रथा है। यदि कोई अपनी पत्नी को तलाक देना चाहे तो वह उसे तलाक देकर पुनः दूसरा विवाह कर सकता है। मुस्लिम धर्म में विवाह को एक समझौते के रूप में ही लिया जाता है। आजकल भारत में मुस्लिम वैवाहिक रीति रिवाज में सुधार करने के लिए और स्त्रियों को सम्मानजनक जीवन जीने के लिए प्रेरित करने के लिए सुधार की आवाज उठाई जा रही है। मुस्लिम धर्म में स्त्रियां पुरुषों के अन्याय तथा अत्याचार को सहन करती है। वहां स्त्रियों की स्वतन्त्रता तथा समानता को खतरा पैदा होना स्वाभाविक है। तलाक की प्रथा पुरुष के सर्वथा अनुकूल है।

हिन्दूओं में विवाह में दहेज की प्रथा प्रचलित है। इससे कन्यापक्ष की स्थिति बहुत कमजोर हो जाती है। अनुचित दबाव डालकर कन्यापक्ष से दहेज लिया जाता है। प्रश्न उठता है कि यह दहेज क्यों लिया जाता है? विवाह तो जीवन का स्वैच्छिक और मांगलिक स्वप्न है। इसमें लेन–देन कैसा? स्त्री पुरुष की समानता की बात को आघात क्यों? धर्म के नाम पर यह समानता क्यों? दहेज समाज के रीढ़ की हड्डी तोड़ रहा है। दहेज न देने पर वर पक्ष द्वारा वधू पर पाशविक अत्याचार किये जाते है, उसे प्रताड़ित किया जाता है। यहां तक की कभी–कभी उसे मार–पीटकरके जला दिया जाता है। आज व्यक्ति का सर्वाधिक ध्यान अर्थ पर केन्द्रित हो गया है। पति–पत्नी को परस्पर मधुर व्यवहार से रहना चाहिए। जिससे एक–दूसरे की आवश्यकताएं पूर्ण होती रहें।